छप्पर मरम्मत करने का समय तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो।
The time to repair the roof is when the sun is shining.

जन-मानस में प्राय: ऐसी शिक्षाप्रद सूक्तियाँ सुनने को मिलती हैं कि- 'का वर्षा जब कृषि सुखानी।', 'अब पछताय होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।' 'कल कभी नहीं आता' (टुमॉरो नेवर केम्स)। ये सारगर्भित सूक्तियाँ जीवन में समय एवं अवसर के महत्व को इंगित करते हुए सही समय पर कार्य को सम्पादित करने की प्रेरणा देती हैं। समय बहुमूल्य है, अनमोल है, सम्पत्ति है परन्तु परिवर्तनशील भी है। कहा भी जाता है समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। समय के महत्व को समझे बिना जीवनपथ पर आगे बढ़ना कठिन है। इसी संदर्भ में ऐसा कहा जाता है कि जब मौसम अनुकूल हो, धूप खिली हो तभी छप्पर की मरम्मत भी हो अर्थात् अभिष्ट कार्य की सिद्धि हो और समस्या का निदान हो।

कबीर की वाणी है-

''दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दु:ख काहे को होय।''

मानव का जीवन समस्याओं, चुनौतियों, अवसर एवं संभावनाओं से युक्त होता है। परन्तु समस्याओं का समाधान, अवसर को पहचानकर, त्वरित अपेक्षित कदम उठाकर, चुनौतियों एवं संभावनाओं के अनुरूप स्वयं को तैयार करने वाला ही जीवनरूपी रणभूमि में सफलता को शिरोधार्य करता है।

एक व्यक्ति भविष्य की समस्याओं का उचित आकलन पहले करके उसकी तैयारी कर सकता है। वह उन सभी संसाधनों का भी उचित प्रबंधन कर सकता है जब धूप खिली हो अर्थात् जब परिस्थितियां अनुकूल हो। लेकिन वहीं जब परिस्थितियां विपरीत हो तब (अर्थात् जब बारिश आदि हो) समस्या का प्रबंधन उचित तौर पर नहीं हो पाएगा, मानसिक स्तर पर तनाव के स्थिति में उस स्थिति को संभालना कठिन होगा साथ ही उस समय की मांग के अनुरूप अन्य कार्यों को भी महत्व देना। अत: उचित परिस्थिति (धूप खिली) में ही छप्पर निर्माण आदि कार्य सम्पन्न हो सकता है। तभी तो आइंस्टीन ने कहा-

''बुद्धिजीवी समस्याओं का समाधान करते हैं, प्रतिभाशाली उससे बचाव का रास्ता खोजते हैं।''

एक अच्छा नेता भी वही होता है जो दूरदर्शी दृष्टिकोण रखते हुए समयानुसार समुचित कदम उठाता है। इसका उदाहरण हम मौर्यकाल से ले सकते हैं। घनानंद के अत्याचारों के विरूद्ध चाणक्य ने समय रहते चन्द्रगुप्त मौर्य को उचित प्रशिक्षण व मार्गदर्शन दिया व समय आने पर मौर्य वंश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

आधुनिक काल में भी हम इसी विचारशीलता का उदाहरण देखते हैं कि कैसे महात्मा गाँधी ने हर बड़े आंदोलन से पहले सभी को आंदोलन हेतु तैयार किया और जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। अर्थात् जब धूप खिली थी तब छप्पर का निर्माण किया ताकि जब आंदोलन रूपी बारिस हो तो सभी तैयार रह सकें।

महात्मा गांधी के ही शब्दों में-

'भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज क्या करते हैं।'

ऐसा ही उदाहरण भारत की आजादी के पश्चात् भी देख सकते हैं। विभाजन की विभिषक पीड़ा के पश्चात् जब भारत स्वतंत्रता के पथ पर बढ़ रहा था तब प्रारम्भ में सुरक्षा रूपी छत की मरम्मत पर ध्यान नहीं दिया गया अर्थात् सुरक्षा ढांचे को मजबूत नहीं बनाया गया और इसी भूल का खमियाजा हमे 1962 के भारत-चीन युद्ध के रूप में उठाना पड़ा लेकिन इसी भूल से भारत ने सीख ली तथा उचित समय के साथ अपनी सुरक्षा रूपी छत की मरम्मत की। इसी तैयारी के साथ 1972 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारत को सफलता मिली। राइफवाल्डो इमर्सन के शब्दों में-

'जब बिल्कुल अंधकार होता है, तब इंसान सितारे देख पाता है'

बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग और ग्लोबल बॉयलिंग का संकट मानव के भावी जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। इसीलिए समय रहते सचेत होकर ग्रीन एनर्जी एवं जीरो कार्बन उत्सर्जन वर अभी से बल

दिया जा रहा है। अगर विश्व के सभी देश इस दिशा में मिल-जुलकर कदम उठाते हैं तो फिर अनेक शहरों और देशों को समुद्र में विलीन होने से रोक जा सकता है। अनुकूल परिस्थिति के साथ कार्य करना ही उचित सीख है। कबीरदास जी के शब्दों में-

''काल करे सो आज करे
आज करे सो अब।
पल में प्रलय होगी,
बहुरि करेगा कब॥''

भारत को प्रत्येक वर्ष बाढ़, सूखा एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। यदि समय रहते, दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ, रणनीति बनाकर कदम उठाये जाए, संरचनात्मक एवं गैर-संरचनात्मक उपाय किए जाएँ तो फिर इनके दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है, रोका जाता सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान समय रहते किया जा सकता है। कैंसर जैसे रोगों का यदि प्रारम्भिक अवस्था में निदान कर दिया जाए तो रोगी को बचाया जा सकता है, वही अत्यधिक देर होने पर समस्याएँ उतनी ही बढ़ती है। कहा भी गया है- **'इलाज से बेहतर रोकथाम होता है।'**

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यह सही है कि छप्पर मरम्मत करने का सही समय तभी होता है जब धूप खिली हुई हो लेकिन हमें कुछ कार्य बारिश या आपदा के दौरान भी करने होते हैं। यथा आपदा प्रबंधन में आपदा पूर्व के चरण की महत्ता होती है। परंतु आपदा के दौरान और बाद में भी बचाव एवं राहत कार्य उतना ही जरूरी है। यथा आपदा के दौरान कैसे विभिन्न विभागों में सामंजस्य स्थापित कर, त्वरित एवं प्रभावी तरीके से कदम उठाते हुए लोगों के जान-माल की रक्षा की जाए।

इसी तरह पुलिस तंत्र को हर परिस्थिति के लिए सुरक्षा तंत्र मजबूत बनाना होता है परन्तु यदि कोई घटना घटित होती है तो उस घटना के अनुरूप उसी समय त्वरित निर्णय लेकर कार्य करना होता है।

लेकिन उपरोक्त परिस्थितियों में भी पहले की गई तैयारियाँ सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थात् धूप खिलने पर ही छप्पर का निर्माण सही रहता है। तभी तो कहा गया है-

''समय इंसान को सफल नहीं बनाता बल्कि समय का सही इस्तेमाल इंसान को सफल बनाता है।''

अन्ततः हम ऐसा कह सकते हैं कि- *''जिसने किया समय का अपव्यय और दुरूपयोग, हुआ उसका जीवन दुश्वार।*
जिसने की समय की पहचान और सद्पयोग, सफल हुआ वह बार-बार''

"रूढ़िगत नैतिकता आधुनिक जीवन का मार्गदर्शक नहीं हो सकती है।"
("Customary morality can not be a guide to modern life")

मानव जीवन की मान्यतायें एवं आवश्यकतायें स्थान, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। आदिमानव से सामाजिक मानव में रूपांतरण के क्रम में जीवन जीने की कला में भी परिवर्तन होता रहा है जिसके परिणामस्वरूप अंततः आधुनिक जीवन की संकल्पना उभरी है।

मानव जीवन और समाज के समुचित संचालन एवं व्यवस्थापन के लिए कुछ रीति-रिवाजों, परम्पराओं, नियमों, सिद्धांतों, मूल्यों एवं आदर्शों की सामाजिक व्यवस्था का होना आवश्यक है ताकि व्यक्तिगत और सामाजिक हित में समन्वय स्थापित हो सके तथा सुखद मानवीय जीवन की स्थापना हो सके। इसी संदर्भ में नैतिकता की स्थिति उभरती है जहाँ उचित-अनुचित, सही-गलत आदि का निर्धारण और इसके आधारों की विवेचना की जाती है।

आधुनिक जीवन तार्किकता और बौद्धिकता के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों यथा- समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व और पंथनिरपेक्षता पर बल देती है। यहाँ मानव की गरिमा और उसके अधिकारों की रक्षा की बात की जाती है। रूढ़िवादी नैतिकता कई संदर्भों में इन मूल्यों का विरोध करती हैं।

रूढ़िगत नैतिकता परम्परागत रूप से चले आ रहे ऐसे व्यक्तिगत अथवा सामाजिक मानकों का समूह है जो अच्छे एवं बुरे चरित्र अथवा व्यवहार का निर्धारण करते हैं। रूढ़िगत नैतिकता से तात्पर्य ऐसे नियमों से हैं जिन्हे परम्परा के आधार पर स्थापित किया गया है।

धार्मिक क्रियाकलापों में संलग्नता रूढ़िवाद नहीं है, परन्तु अपनी मान्यताओं एवं पद्धतियों को एकमात्र सही रास्ते के रूप में स्वीकार करना और अन्य धर्मों की मान्यताओं एवं क्रियाकलापों का विरोध करना धार्मिक रूढ़िवाद को जन्म देता है, जिसकी चरम परिणति साम्प्रदयिकता एवं धार्मिक हिंसा और संघर्ष के रूप में होती है। स्पष्ट है कि विरोध धार्मिक आचरण का नहीं है बल्कि रूढ़िवादी साम्प्रदायिक मानसिकता का है।

रूढ़िगत नैतिकता का उभार स्थान, काल और परस्थिति और व्यक्ति के तात्कालिक ज्ञान और क्षमता के अनुसार होता है। परन्तु समय परिवर्तन एवं ज्ञानात्मक वृद्धि के साथ-साथ रूढ़िगत नैतिकता अपना महत्व खो देती है जिसके कारण इन अप्रांसगिक हो चुकी परम्पराओं को सही स्वरुप देने या हटाने के लिए नये कानून पारित किये जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर भारत में सती प्रथा, बाल-विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह निषेध, ऊंच-नीच और छुआछूत की स्थिति समाज में प्रचलित थी। विभिन्न महापुरूषों द्वारा जब सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के जरिए समाज में प्रचलित परंपराओं में परिवर्तन का प्रयास किया गया तो लोगों को यह सब अनाधिकारी हस्तक्षेप की भांति प्रतीत हुआ। सती प्रथा उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह, लड़कियों के लिए पाश्चात्य शिक्षा, छुआछूत का विरोध करना लोगों को आरम्भ में अनैतिक लगा परन्तु सतत् प्रयास से अंधविश्वासों एवं कुरीतियों के विरूद्ध वातावरण तैयार हुआ और अन्ततः राजा राममोहन राय के प्रयासों के फलस्वरूप 1829 ई. में सती प्रथा उन्मूलन कानून, तो ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बनाये गये।

जिन रीति-रिवाजों, प्रथाओं एवं परम्पराओं ने समाज की प्रगतिशीलता को बाधित किया उनके प्रति सर्वोच्च न्यायपालिका के साथ-साथ भारत सरकार ने भी कड़ा रूख अख्तियार किया है। उदाहरण के तौर भारत सरकार ने उन तमाम कानूनों को समाप्त करने का निर्णय लिया है जिन्हे ब्रिटिश शासन के दौरान लागू किया गया किंतु वर्तमान में इनकी प्रांसगिकता नहीं रह गयी है।

किंतु रूढ़िगत नैतिकता का एक दूसरा पहलू भी है जिसका उल्लेख किये बिना हमारी बात अधूरी ही रहेगी। वस्तुतः 'रूढ़िगत नैतिकता' के तहत कुछ ऐसी परम्परायें निर्धारित की गयीं जो न केवल वर्तमान समय में भी प्रांसगिक हैं बल्कि वैज्ञानिक एवं तार्किक भी हैं।

इसी प्रकार महात्मा बुद्ध प्रतिपादित मध्यम मार्ग और पंचशील की अवधारणा वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। महावीर

के स्याद्वाद और त्रिरत्न की अवधारणा, गुरूनानक देव का ' सरबत दा भला', कबीर की हिन्दू-मुस्लिम एकता, देश की गंगा-जमुनी तहजीब, गांधी का सत्य एवं अंहिसा तथा टैगोर के मानवतावाद का महत्व आज भी बना हुआ है।

दरअसल रूढ़िगत नैतिकता के तहत निर्धारित उन मानकों को दरकिनार किया जाना चाहिए जो वर्तमान जीवन के अनुकूल नहीं रह गये हैं और विकास के मार्ग में बाधक बने हुए हैं। जबकि परम्परागत नैतिकता के उन मान्यताओं, आधारों या मानकों को स्वीकार किया जाना चाहिए जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुयी है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि जो पुरातन है, परम्परागत रूप से आ रहा है- वह सब कुछ न तो पूरी तरह व्यर्थ, अप्रासंगिक और त्याज्य है और न ही सब कुछ अच्छा और ग्रहणीय है। वस्तुतः परम्परा के साथ ही ग्रहण और त्याग की उदार दृष्टि का समावेश करना होगा। जिस प्रकार हंस नीर से क्षीर को अलग कर लेता है उसी प्रकार विवेकशील अपनी व्यक्ति बुद्धि से परीक्षण करके जो श्रेष्ठतर वस्तु या विचार है उसको अंगीकार कर लेते हैं।

वस्तुतः रूढ़िगत नैतिकता प्रत्येक मामले में आधुनिक जीवन का मार्गदर्शक नहीं हो सकती है किंतु इसे पूर्णतः नजरअंदाज करना भी गलत होगा। इसका कारण यह है कि रूढ़िगत नैतिकता के तहत निर्धारित कुछ मान्यतायें वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आगामी पीढ़ी के लिए भी मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती रहेंगी। योग, 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'तेन त्यक्तेन भुंजिथाः (त्यागपूर्वक भोग)' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की प्राचीन अवधारणाएँ अभी भी प्रासंगिक है, उपादेय है। साथ ही आधुनिक जीवन शैली की विकृतियों जैसे भोगवाद आदि से बचकर प्रगतिशील मानवीय मूल्यों को धारण करते हुए जीवनपथ पर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR